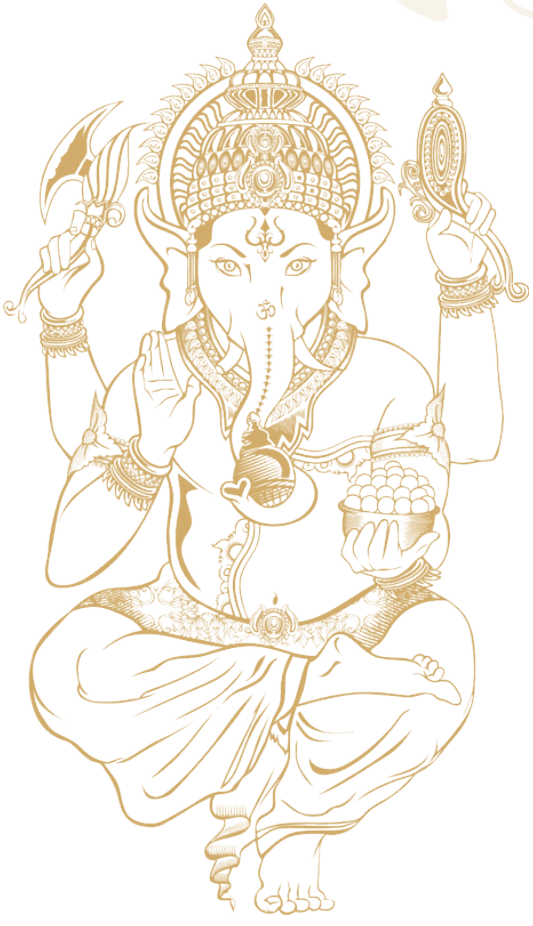

Lovely Mahato

09 Aug 1998

04:30 PM

Masanjor

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121166201**

तिथि 09/08/1998 **समय** 16:30:00 **वार** रविवार **स्थान** Masanjor **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:50:08
अक्षांश 24:07:00 उत्तर **रेखांश** 87:19:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:19:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	14:00:13 घं
वेलान्तर	00:05:33 घं
सूर्योदय	05:13:06 घं
सूर्यास्त	18:18:58 घं
चैत्रादि संवत	2055
शक संवत	1920
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	2
नक्षत्र	शतभिषा
योग	शोभन
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सा-सपना
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

राहु 12वर्ष 3मा 24दि
गुरु
03/12/2010
03/12/2026

गुरु	20/01/2013
शनि	03/08/2015
बुध	08/11/2017
केतु	15/10/2018
शुक्र	15/06/2021
सूर्य	03/04/2022
चन्द्र	03/08/2023
मंगल	09/07/2024
राहु	03/12/2026

योगिनी

धान्या 2वर्ष 0मा 19दि
संकटा
28/08/2022
28/08/2030

संकटा	08/06/2024
मंगला	28/08/2024
पिंगला	06/02/2025
धान्या	08/10/2025
भ्रामरी	28/08/2026
भद्रिका	08/10/2027
उल्का	06/02/2029
सिद्धा	28/08/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:10:37	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	---	0:00			
सूर्य			22:49:41	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.48	अमात्य	पितृ	क्षेम
चंद्र			10:52:36	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	सम राशि	1.19	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			28:48:25	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	1.08	आत्मा	भ्रातृ	सम्पत
बुध	व	अ	00:47:24	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.18	कलत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		03:24:52	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	स्वराशि	1.38	पुत्र	धन	विपत
शुक्र			01:22:22	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	राहु	शत्रु राशि	1.14	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि			09:45:28	मेष	अश्विनी	3	केतु	शनि	नीच राशि	1.29	मातृ	आयु	प्रत्यारि
राहु			07:37:01	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु			07:37:01	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

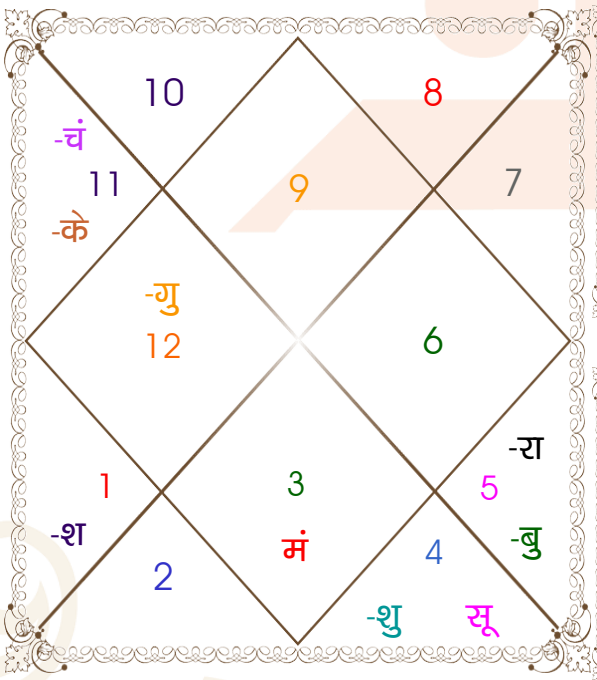

चन्द्र कुंडली

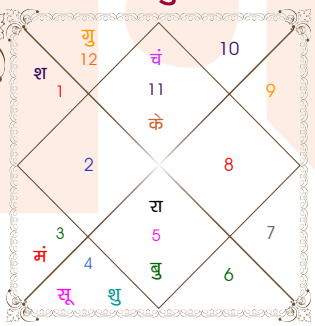

नवमांश कुंडली

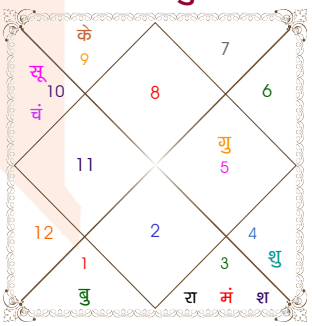

सर्वाष्टकवर्ग

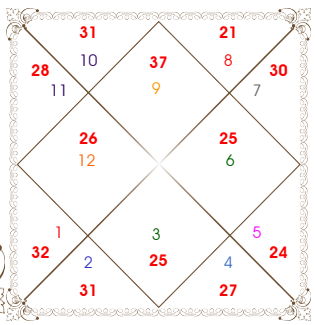

दशमांश कुंडली

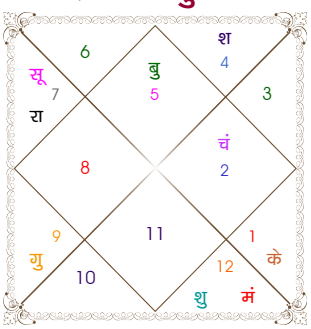

Astro anuj
Raghunathpur Ranishwar Dumka
+917004580085
dayashaclasses@gmail.com

नक्षत्रफल

आप शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण राक्षस तथा योनि अश्व होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणपनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "स" या "सा" अक्षर से होगा यथा- सरिता, सविता आदि।

आप ठंड से भयभीत रहेंगी तथा इसे सहन करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगी। आप वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा अत्यन्त साहसिक कार्यों को करने के लिए सदैव उत्सुक तथा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपके अधिकांश कार्य भी साहस पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। आप कठोरता के भाव के अधिक रूप में प्रदर्शन करेंगी एवं दया तथा करूणा का भाव आप में अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप एक चतुर महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को चतुराई से ही सम्पन्न करेंगी। साथ ही अन्य लोग भी आपको चतुराई से प्रभावित रहेंगे तथा आपका यथायोग्य सम्मान भी करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित रहेंगे एवं आपसे प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष शास्त्रा के प्रति आपके मन में प्रारम्भ से ही श्रद्धा तथा रूचि रहेगी एवं इसका आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इसके साथ ही अपने समस्त कार्यों को आप शान्त चित्त से सम्पन्न करेंगी। आपको अल्प मात्रा में भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर एवं प्रियकर लगेगा तथा उसके लिए आप नित्य रूचिशील रहकर आनन्द की अनुभूति करेंगी।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आपके पास धन सम्पति की विपुलता रहेगी एवं समाज में एक धनाढ्य महिला के रूप में प्रसिद्ध होगी परन्तु आप कंजूसी की वृति से युक्त रहेंगी। अतः धन को उन्मुक्त रूप से व्यय करने में असमर्थ रहेगी तथा संचय के प्रति आपका विशेष ध्यान रहेगा। पुरूषवर्ग में आप आदरणीय तथा प्रिय समझी जाएंगी एवं उससे आपको यथायोग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा। साथ ही अवसरानुकूल आप उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त

आप विदेश में अधिकांश रूप से भ्रमण करती रहेंगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप हमेशा स्पष्ट बोलने में विश्वास रखेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक अपनी इस प्रवृति का जीवन में अनुपालन करती रहेंगी। साथ ही कई प्रकार के व्यसनों आदि का भी आपको शौक रहेगा तथा इनका आप आस्वादन करती रहेंगी। साथ ही आप दुराग्रही प्रवृति की महिला भी होंगी तथा अपने कार्यों या बात पर ही अडिग रहेंगी चाहे वह सही हो या न हो

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नाक उन्नत होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत आकार का रहेगा। साथ ही हाथ, पैर एवं कमर में स्थूलता भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होगी। आपके शरीर में लावण्यता की अल्पता रहेगी परन्तु इसमसे आपका सौन्दर्य विशेष प्रभावित नही होगा एवं उसमें सौन्दर्य तथा आकर्षण बना रहेगा। आपके अर्न्तमन में विद्रोह की भावना भी रहेगी। इसके साथ ही आपके स्वभाव में उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। धर्म में भी आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी। आप की प्रवृति आलसी भी होगी शिल्प या चित्रकारी में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी तथा इस क्षेत्र में विशेष योग्यता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ताओं के कारण व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगी।

उद्घोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विभिन्न शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा अतः समाज में एक विदुषी के रूप में आपका प्रभाव रहेगा तथा कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता भी आप में रहेगी। इसके साथ ही शत्रुवर्ग का नाश करने में भी आप नित्य सफल रहेंगी।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप की प्रवृति अप्रत्यक्ष रूप से कूर कार्यों को करने में भी प्रवृत रहेगी या आप इन कार्यों में अपना अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करेंगी। यात्रा तथा भ्रमणादि करने में आपकी विशेष रूचि रहेगी। अतः अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगी। आप दूसरे के धन को प्राप्त करने की नित्य इच्छा करेगी तथा इसके साथ ही धन के प्रति आप में लालच का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः क्षय वृद्धि से युक्त रहेगी अर्थात् इसके अतिरिक्त सुगध्ति द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पादि के प्रति भी हार्दिक रूचि रहेगी एवं इसका आप उपयोग समय समय पर करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप में श्रेष्ठ विद्वानों के गुण विद्यमान रहेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा भी रहेगी परन्तु अन्य विद्वान जनों को आप यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंक्षी इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

जीवन के हर क्षेत्र में आप अधिकांश रूप से विजयी तथा सफल रहेंगी एवं जीवन में सदाचार का यत्नपूर्वक पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। धनवैभव से आप प्रायः सुशोभित रहेंगी लेकिन यदा कदा इसका अभाव भी आपके पास रहेगा। गुरूजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल आप इनकी सेवा तथा सहायता के लिए तत्पर रहेंगी एवं पुरूष वर्ग में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप विशाल परिवार की स्वामिनी होंगी तथा आपकी जाति या वर्ग के लिए जो भी अच्छा कार्य होगा उसको अपने पूर्ण प्रयत्नों से सफल करेंगी। अतः जाति तथा बन्धुवर्ग में आपको उचित मान सम्मान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप कई सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी था

जीवन में इसका अनुपालन करके प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन दीर्घ तथा शरीर की नसे भी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होगी। समाज तथा कार्यक्षेत्र में आप पुरूषों से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही मित्रवर्ग के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह तथा सम्मान का भाव भी रहेगा तथा उनका सहयोग करने के लिए आप सदैव उद्यत रहेगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऊध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप एक दानी प्रवृति की महिला होंगी तथा जीवन में यत्नपूर्वक इस प्रवृति का अनुपालन करने में तत्पर रहेंगी। इस प्रवृति से आपको सामाजिक प्रतिष्ठा तथा ख्याति भी अर्जित होगी तथा दूर दूर तक लोग आपको जानेंगे। साथ ही कृतज्ञता का भाव भी आप में रहेगा एवं अन्य जनों को उपकृत होने पर भी उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक धन्यवाद भी करेंगी। आपकी आखें सुन्दरता से युक्त दर्शनीय रहेगी तथा बुद्धि भी सरलता से युक्त रहेगी तथा किसी के साथ धोखा या प्रपंच नहीं करेंगी। इस प्रकार अपने मृदु व्यवहार तथा अन्य सद्गुणों के कारण आप समाज में प्रसिद्धि तथा लोकप्रियता को अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा स्वभुजबल से धनार्जन करके सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के वाहन आदि साधनों से भी आप सुशोभित रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप कभी कभी अधिक रूप से बोलने वाली होंगी एवं हृदय में दया एवं करूणा के भाव की रहेगी परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी। अतः साहस पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। साथ ही क्रोध की भी अधिकता आप में होगी एवं अकारण ही इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप की

आपमें विवादादि करने की भी इच्छा रहेगी तथा अन्य जनों से आपका परस्पर कलह आदि होता रहेगा। लेकिन शारीरिक बल से आप पूर्ण रहेंगी।

जीवन में यदा कदा उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकती हैं। साथ ही आपके सौन्दर्य भी सामान्य आकर्षक रहेगा। आप अपने सम्भाषण में कभी कभी कटु शब्दों का भी प्रयोग करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न अप्रहन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में जन्म होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रवृति की महिला होगी एवं अपने कार्यकलापों में बाह्य हस्तक्षेप पसन्द नहीं करेंगी। आप में सद्गुणों की भी अधिकता रहेगी एवं शौर्यगुणों से भी आप युक्त रहेंगी एवं अपने कार्य कलापों को साहस तथा निर्भयता से सम्पन्न करेंगी। आप एक तेजस्वी महिला होंगी तथा आपके तेज से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही वीणा आदि वाद्य यंत्रो को बजाने में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा इसमें दक्षता प्राप्त करेंगी। आप एक ईमानदार तथा विश्वास योग्य महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण विश्वसनीय तथा सम्मानित समझी जाएंगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं

अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्दा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्दा नक्षत्र, गंडयोग तथा वणिज करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता की

प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं समस्त अशुभ प्रभाव नष्ट होकर सर्वत्र शुभ प्रभावों की वृद्धि होगी एवं लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।